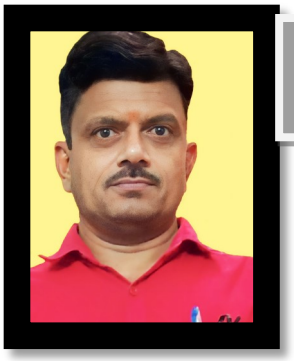

व्यग्र पाण्डे

गंगापुर सिटी, राजस्थान

आये दिन अच्छे...

बरखा की बूँदें क्या आई
मानो आये दिन अच्छे
लगे प्रकृति निखरी-निखरी
मानो आये दिन अच्छे

मन करता चँढ़ जाऊँ छत पर,
या दगड़े में मौज करूँ
फिर से मैं बच्चा बन जाऊँ
मानो आये दिन अच्छे

मना करे माँ जाने को,
पहली बारिश में नहाने को
आँख चुरा निकलना चाहूँ
मानो आये दिन अच्छे

उमड़-घुमड़ कर बदरा आये
मेंढ़क पल पल में टर्राये
झींगर अपनी राग सुनाये
मानो आये दिन अच्छे

भर-भर अँजुरी इन्द्र लुटाये
तप्त धरा की अगन मिटाये
नदी और नाले बौराये
मानो आये दिन अच्छे

नभ ने अमृत बरसाया है
जीवन फिर से सरसाया है
राग-मल्हार सब गाये
मानो आये दिन अच्छे

माटी छोड़े गंध सुहानी
धरती दीखे पानी-पानी
खिल गया चेहरा किसान का
मानो आये दिन अच्छे...